**ओ३म्**

**“डा. भवानीलाल भारतीय की पुस्तक ‘बिखरे मोती’ एक महत्वपूर्ण कृति”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

डा. भवानीलाल भारतीय आर्यसमाज के शीर्षस्थ विद्वानों में से एक वयोवृद्ध ऋषि जीवन के एक प्रमाणिक विद्वान हैं। आपने ऋषि दयानन्द के जीवन पर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन कर आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा की है। हम सन् 1970 में आर्यसमाज के सम्पर्क में आने के समय से ही आपके पत्र-पत्रिकाओं में लेखों व पुस्तकों को प्राप्त कर पढ़ते रहे हैं। आपकी लेखन शैली, विचाराभिव्यक्ति व भाषा में चारुता पाठक के हृदय को मोहित वा सुप्रभावित करती है। आपकी भाषा प्रभावशाली, परिमार्जित एवं संस्कृतनिष्ठ है। हमें आर्यसमाज धामावाला देहरादून में आपके अनेक प्रवचनों को सुनने का सुअवसर भी मिला है। वर्षों पूर्व एक बार हम जोधपुर में महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास भ्रमण करने गये। उस दिन रविवार था और वहां एक बैठक चल रही थी। सौभाग्य से हमें आपके वहां दर्शन हुए थे। एकाधिक बार हमें आपके नन्दनवन, जोधपुर निवास पर जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आपने हमें तब अपना पुस्तकालय दिखाया था जिसमें अनेक दुलर्भ व महत्वपूर्ण ग्रन्थों सहित सत्यार्थ प्रकाश के अनेक संस्करण एवं अनेक सत्यार्थप्रकाश के अनेक भाषाओं में अनुदित संस्करण उपलब्ध थे। एक बार हम गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार और गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर गये थे। इन दिनों दोनों गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव एक समान तिथियों में होते थे। गुरुकुल ज्वालापुर में हमें डा. भारतीय जी के दर्शन हुए थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक डा. सच्चिदानन्द शास्त्री जी के भी वहां दर्शन हुए थे। वहां से हम भारतीय जी के साथ गुरुकुल कांगड़ी आये थे। वहीं हमें आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य विश्वश्रवा जी मिले थे और उनसे डा. भारतीय जी का वार्तालाप हुआ था। डा. भारतीय जी ने ही हमारा उनसे परिचय कराया था। आचार्य विश्वश्रवा जी ऊंचा सुनते थे। अतः उनसे बातचीत करने के लिए ऊंची आवाज में बोलना पड़ता था। गुरुकुल कांगड़ी में हम पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महाशय कृष्ण जी के पुत्र श्री वीरेन्द्र जी के कक्ष में भी गये थे। वहां भारतीय जी और वीरेन्द्र जी की अनेक विषयों पर चर्चा हुई थी। वीरेन्द्र जी ने भारतीय जी को पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास लिखने का प्रस्ताव किया था। सहमति भी हुई थी परन्तु बाद के किन्हीं कारणों से यह इतिहास लिखा नहीं जा सका। डा. भारतीय जी से तीन चार दशक पूर्व हमारा नियमित पत्रव्यवहार भी होता था। आपकी हम पर बहुत कृपा रही है और अब भी है। अभी कुछ दिन पूर्व ही आपके द्वारा लिखित एक पत्र हमें प्राप्त हुआ है। एक वरिष्ठ विद्वान से इस प्रकार आशीर्वाद का मिलना हमें प्रसन्नता देता है। गुरुकुल कांगड़ी से निवृत होकर हम वेद मन्दिर, ज्वालापुर में डा. रामनाथ वेदालंकार जी के पास आ गये थे जहां भारतीय जी निवास कर रहे थे। इस अवसर पर डा. रामनाथ वेदालंकार जी से भी अनेक विषयों पर बातचीत हुई थी। इस लेख में हम भारतीय जी की एक पुस्तक **‘‘बिखरे मोती”** का उल्लेख कर रहे हैं जिससे पाठकों को इसकी स्मृति हो सके और उन्हें इसकी विषय वस्तु का परिचय मिल सके।

 पुस्तक के आवरण पृष्ठ के भीतर की ओर **‘एक अनूठा प्रकाशन’** शीर्षक से पुस्तक का परिचय देते हुए कहा गया है कि ‘आर्य महापुरुषों के रोचक, शिक्षाप्रद, संस्मरणों, शास्त्रार्थों की नोक-झोंक, आर्यों के आदर्श-चरित्र को प्रस्थापित करने वाले जीवन-प्रसंगों, साहित्यकारों की हास्यपूर्ण उक्तियों तथा उपदेशकों की हाजिर जवाबी को यदि आप एक साथ पढ़ना चाहें तो खरीदें आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ **‘बिखरे मोती’**। लगभग 150 प्रसंगों के इस अद्भुत संकलन में स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, पं, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, महात्मा हंसराज तथा अन्य आर्य विद्वानों, नेताओं तथा उपदेशकों के प्रेरणाप्रद संस्मरण संग्रहीत हैं। साथ ही महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, महाकवि निराला, जार्ज बर्नार्ड शाॅ जैसे लब्ध ख्याति साहित्यकारों के साहित्यिक हास्यपूर्ण प्रसंग भी इसमें संकलत किए गए हैं। शिष्ट हास्य, व्यंग्य, वक्रोक्ति, वागविदग्धता तथा जीवन को स्फूर्ति प्रदान करने वाले ये रोचक प्रसंग वे बिखरे मोती हैं जिनकी गुणवत्ता और महार्घता को सहृदय पाठक ही पहचान सकते हैं।’

 इस पुस्तक **‘बिखरे मोती’** का प्रकाशन सन् 1995 में वैदिक साहित्य के प्र्रमुख प्रकाशक **‘विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली’** से किया गया है। पुस्तक में 92 पृष्ठ और अनेक अध्याय हैं। पुस्तक का मूल्य मात्र 40 रुपये है, इसकी प्रकाशित प्रतियों की संख्या का उल्लेख पुस्तक में नहीं किया गया है। अध्यायों के जो शीर्षक दिये गये हैं वह क्रमश हैं: ऋषि दयानन्द के रोचक संस्मरण, आर्य महापुरुषों के रोचक प्रसंग स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, नारायण स्वामी, शास्त्रार्थों के मनोरंजक क्षण, पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. धर्मभिक्षु लखनवी, हाजिर जवाबी में आर्यों का कमाल, आर्यों का चरित्र, कैसे-कैसे पौराणिक विद्वान, उपदेशकों के रंग, स्फुट प्रसंग, साहित्यकारों का हास्य और अन्ततः। पुस्तक के आरम्भ में डा. भारतीय जी का लिखा हुआ सम्पादकीय है जिसमें पुस्तक में सम्मिलित विषयों पर प्रकाश डाला गया है। डा. भारतीय जी सम्पादकीय में लिखते हैं ‘सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा महापुरुषों के जीवन, व्यक्तित्व, कार्य तथा बोलचाल में कभी-कभी ऐसी असाधारणता दिखाई पड़ती है जो जनसाधारण को विस्मय-विमुग्ध कर देती है। प्रायः हम देखते हैं कि किसी महापुरुष का कोई कथन, उसकी कोई टिप्पणी, उसके द्वारा किया गया कटाक्ष भी किसी-न-किसी विशिष्टता का परिचायक हो जाता है। अपने अध्ययन के प्रसंग में जब विभिन्न महापुरुषों के जीवन से जुड़े ऐसे ही प्रसंगों को मैंने पढ़ा तो विचार आया कि इनका संग्रह किया जाना चाहिए। फलतः आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द तथा कतिपय अन्य आर्य पुरुषों के ऐसे ही रोचक किन्तु शिक्षाप्रद जीवन प्रसंगों का संग्रह करता रहा। इन प्रसंगों की विशिष्टता, नवीन अर्थवत्ता तथा प्रेरणा देने की शक्ति ने ही इन्हें जन-मन-रंजक बनाया है।

 आर्यसमाज के स्थापना-काल से ही प्रतिद्वन्द्वी धर्म-संस्थानों से उसके विद्वानों द्वारा किये जाने वाले शास्त्रार्थों ने श्रोतावर्ग में कभी असीम लोकप्रियता प्राप्त की थी। आजकल तो ऐसे शास्त्रार्थ प्रायः दुर्लभ ही हो गए हैं, किन्तु विगत शताब्दी के अन्तिम दशक से लेकर इस शताब्दी के प्रथम तीन दशकों तक उत्तर भारत का धार्मिक परिदृश्य शास्त्रार्थों और धार्मिक वाद-विवादों से निनादित रहा। इन शास्त्रार्थों के द्वारा पक्ष-विपक्ष के विद्वान सत्य तक पहुंच पाने की चेष्टा करते थे और उनके द्वारा विवादास्पद विषय के पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत की जाने वाली युक्तियों तथा प्रत्युक्तियों से श्रोतृवर्ग का ज्ञानार्जन तो होता ही था, उनकी विचार शक्ति का भी विकास होता था। इन शास्त्रार्थों में **‘वादे वादे जायते तत्वबोधः’** की भावना कितनी मात्रा में रहती थी, यह तो दूसरी बात है, किन्तु इतना अवश्य है कि पक्ष-विपक्ष के शास्त्रार्थी विद्वानों के स्वपक्ष की पुष्टि तथा प्रतिपक्ष के निराकरण के लिए पर्याप्त बौद्धिक श्रम करना पड़ता था। शास्त्रार्थ तो एक प्रकार के युद्ध ही होते थे जिनमें प्रतिद्वन्द्वी महारथी एक-दूसरे को पराजित करने के लिए नाना प्रकार के उपाय प्रयोग में लाते थे तथा प्रतिपक्ष की चुक्तियों को काटने के लिए व्यंग्य, कटाक्ष, यहां तक कि कटूक्तियों तक का प्रयेाग करने में भी संकोच नहीं करते थे। हमने इस पुस्तक का एक भाग इन शास्त्रार्थों में आए ऐसे ही प्रसंगों को समर्पित किया है जिनमें व्यंग्य, विनोद तथा असाधारण वाक्पटुता के दर्शन होते हैं। जिस प्रकार युद्ध में सैनिक की वीरता, धैर्य, शौर्य और पराक्रम को तो महत्व मिलता ही है, किन्तु कभी-कभी असाधारण परिस्थिति उत्पन्न होने पर उसकी निर्णय-क्षमता तथा विजय को सुनिश्चित बनानेवाली किसी प्रक्रिया को अपनाना उसके लिए आवश्यक हो जाता है, उसी प्रकार शास्त्रार्थ में भी विद्वान् का विस्तृत अध्ययन, उसकी असाधारण स्मृति तथा अभिव्यक्ति कौशल के साथ-साथ उसकी हाजिरजवाबी तथा प्रतिपक्ष के पण्डित को निग्रहस्थान में ले-जाने का कौशल भी महत्वपूर्ण बन जाते हैं। हमने इस संग्रह में शास्त्रार्थों के ऐसे अनेक रोचक प्रसंगों को सम्मिति किया है जिनमें शास्त्रार्थकर्ता विद्वानों की प्रत्युत्पन्नमति, वाक्-कौशल तथा अनायास ही अपने प्रतिपक्षी पर सांघातिक आक्रमण करने के उनके फुर्तीले दाँव-पेंचों का ज्ञान होता है। सम्पादकीय की शेष बातें हम विस्तार भय से नहीं दे रहे हैं जिन्हें पुस्तक में ही देखना उचित होगा।

 हमें यह पुस्तक भी डा. भारतीय जी की अन्य पुस्तकों के समान महत्वपूर्ण एवं आर्य साहित्य में स्वाध्याय हेतु उत्तम प्रतीत होती है। इसी लिए हमने इसका परिचय पाठकों को प्रस्तुत किया है। हमें लगता है कि अभी यह पुस्तक प्रकाशक से उपलब्ध है। आने वाले समय में यह अलभ्य हो जायेगी। जो पाठक स्वाध्याय व पुस्तक संग्रह में रूचि रखते हों, वह इसे प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। इसी के साथ हम लेखनी को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**